thearyasamaj.org

ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति, संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजापार्क, जयपुर

वर्ष : 89 अंक : 6
पौष कृष्ण चतुर्दशी
विक्रम संवत् 2071
कलि संवत् 5115
21 दिस., 2014 से 5 जन., 2015
दयानन्दाब्द : 190
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,115

मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161

संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुनदेव चड्डा , कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा , जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य , अलवर
श्री अनिल आर्य, जयपुर

प्रकाशक :
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजापार्क, जयपुर ।
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 1 व 15

पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा
सम्पादक, आर्य मार्तण्ड,
42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास , जयपुर
मोबाईल – 9314032161

मुद्रक :
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स, जयपुर
ग्राफिक्स : **PRINTPACK, Jaipur**
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
ऑनलाइन प्राप्ति:
www.thearyasamaj.org/aryamartand
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

"विश्व योग दिवस" घोषित किये जाने पर सभी देशवासियों को हार्दिक बधाईयाँ ।

.....पढ़ें समाचार पृ. –5 पर

अमर स्वतन्त्रता सेनानियों को नमन

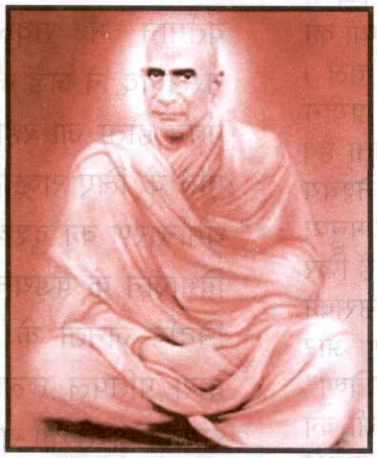

मूल नाम : बृहस्पति / मुंशीराम
संन्यास का नाम : स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती
पिता का नाम : लाला नानकचन्द
जन्म : 22 फरवरी, 1856
स्थान : ग्रा. तलवान, जि. –जालन्धर, पंजाब
पेशा : वकील
संस्थापक : गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार, कन्या विद्यालय, जालन्धर, शुद्धि महासभा
पत्रः सद्धर्म प्रचारक, अर्जुन, तेज
बलिदान : 23 दिसम्बर, 1926
बलिदान स्थानः नया बाजार, दिल्ली ,

पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल'
पिताः श्री मुरलीधर
माताः श्रीमती मूलमती
जन्मः 11 जून, 1987
जन्म स्थानः शाहजहाँपुर, उत्तरप्रदेश
पेशाः कवि, शायर, अनुवादक
संस्थापकः हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन
बलिदानः 19दिस.,1927

शहीद अशफाकउल्ला खाँ
पिताः मो. शफीउल्ला खाँ
माताः बे. मजहुरून्निशाँ
जन्मः 22 अक्टू.1990
जन्म स्थान :शाहजहाँपुर, उत्तरप्रदेश
पेशाः उर्दू कवि, शायर,
बलिदानः 19दिस.,1927

ठाकुर रोशन सिंह
पिताः श्री जंगीराम सिंह
माता–कौशल्यानी देवी
जन्मः 22 जन.,1892
जन्म स्थान : नावदा, शाहजहाँपुर
पेशाः शॉर्प शूटर
बलिदान : 19दिस.,1927

शहीद राजेन्द्रनाथ लाहिरी
पिताः श्री क्षितिशमोहन
जन्मः 1892
जन्म स्थान : मोहनपुर, पाबना, बंगाल (वर्तमान बांग्लादेश)
पेशाः एम.ए. विद्यार्थी
बलिदान : 17 दिस.,1927

पराजित राष्ट्र तब तक पराजित नहीं होता, जब तक कि वह अपनी संस्कृति एवं मूल्यों की रक्षा कर पाता है। –चाणक्य

thearyasamaj.org

वेदामृत

ओ३म् तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ।। 1 ।।
– यजुर्वेद अ. 31 / मं. 7 ।।

भावार्थ :

प्रथम ईश्वर को नमस्कार और प्रार्थना करने के पश्चात् वेदों की उत्पत्ति का विषय लिखा जाता है कि वेद किसने उत्पन्न किये हैं। (तस्मात् यज्ञात्स0) सत् जिसका कभी नाश नहीं होता, चित् जो सदा ज्ञानस्वरूप है, जिसको अज्ञान का लेश भी कभी नहीं होता, आनन्द जो सदा सुखस्वरूप और सबको सुख देने वाला है, इत्यादि लक्षणों से पुरुष जो सब जगह में परिपूर्ण हो रहा है, जो सब मनुष्यों को उपासना के योग्य इष्टदेव और सब सामर्थ्य से युक्त है, उसी परब्रह्म से (ऋचः), ऋग्वेद, (यजुः) यजुर्वेद, (सामानि) सामवेद और (छन्दांसि) इस शब्द से अथर्व भी, ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं। इसीलिये सब मनुष्यों को उचित है कि वेदों का ग्रहण करें और वेदोक्त रीति से ही चलें । 'जज्ञिरे' और 'अजायत' इन दोनों क्रियाओं के अधिक प्रयोग होने से वेद अनेक विद्योओं से युक्त हैं ऐसा जाना जाता है। वैसे ही 'तस्मात्' इन दोनों पदो के अधिक होने से यह निश्चय जानना चाहिए कि ईश्वर से ही वेद उत्पन्न हुए हैं किसी मनुष्य से नहीं । वेदों में सब मन्त्र गायत्र्यादि छन्दों से युक्त ही हैं फिर 'छन्दांसि' इस पद के कहने से चौथा जो अथर्ववेद है, उसकी उत्पत्ति का प्रकाश होता है। शतपथ आदि ब्राह्मण और वेदमन्त्रों के प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि 'यज्ञ' और 'विष्णु'' का और विष्णु शब्द से सर्वव्यापक जो परमेश्वर है उसी का ग्रहण करना होता है, क्योंकि सब जगत् की उत्पत्ति करनी परमश्वेर में ही घटती है अन्यत्र नहीं ।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती , ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

फांसी से ठीक पहले हुआ ''जेलर –बिस्मिल'' का अद्भुत एवं प्रेरणादायी संवाद :

जेलरः

बिस्मिल ! क्या तुम्हें पता नहीं है कि तुम्हें थोड़ी देर में फांसी होने वाली है और फिर तुम इस दुनिया में नहीं रहोगे ।

बिस्मिल : जी हाँ। भलीभांति ध्यान है।

जेलर :

फिर बेकार में ही व्यायाम क्यों कर रहे हो ?

बिस्मिल :

जिससे कि मैं अगले जन्म में और भी अधिक शक्ति के साथ आऊँ और अंग्रेजी साम्राज्य का जड़ से उखाड़ फेंकू।

यह उत्तर सुनकर जेलर उन्हें अवाक् सा देखता रह गया ।

यह थी हमारे क्रान्तिवीरों की शूरवीरता ।

सम्पादकीय

कल्याण मार्ग का पथिक

स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान को सार्थक बनायें

आर्य जगत् के लौह पुरूष, निर्भीकता की प्रतिमा, आर्य सेनानी, राष्ट्रवादी, निष्काम सेवक, अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस हम बड़े उत्साह से प्रतिवर्ष मनाते हैं । इस अवसर पर एक ज्वलन्त प्रश्न हमारे समक्ष स्वतः ही उपस्थित हो जाता है कि क्या हम जलसे–जुलूस एवं सभाओं तक ही सीमित रहेंगे या बदली हुई परिस्थितियों में स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान की सार्थकता को समाज के सामने प्रस्तुत करेंगे । वर्तमान में सर्वत्र धर्मोन्माद, आतंकवाद, उग्रवाद, नस्लवाद, ने जड़ें जमा ली हैं। मानवीय मूल्यों का निरन्तर पतन होता जा रहा है । राजनेता अपने क्षुद्र स्वार्थो की पूर्ति के लिए राष्ट्रीय अस्मिता को दांव पर लगा रहे हैं । धर्मान्तरण का दुश्चक्र अभी भी चल रहा है, भारत–भू के विभाजन के षड़यन्त्र आज भी रचे जा रहे हैं । देश की निर्दोष जनता के साथ पंथ–निरपेक्षता एवं तुष्टिकरण द्वारा प्रतिपल छलावा किया जा रहा है। जबकि आर्य समाज भारत की राष्ट्रीय एकता का सदैव पक्षधर रहा है । उसकी स्पष्ट नीति रही है कि देश की राजनीति राष्ट्रीयता के द्वारा शासित हो, न कि साम्प्रदायिक तुष्टिकरण द्वारा । इस कुत्सित राजनीति का ही दुष्परिणाम है कि जहां एक ओर बालकों की पढ़ाई एवं बचपन बचाने के पुरूषार्थ को विश्व के सर्वोच्च सम्मान ''नोबेल पुरस्कार'' से प्रोत्साहित किया जा रहा है वहीं दूसरी ओर इसके कुछ दिनों के पश्चात् ही पाकिस्तान में स्कूली बच्चों की क्रूरतापूर्ण हत्या कहाँ तक सह्य एवं क्षम्य है ? इन समस्त हृदयविदारक घटनाओं से हमें यह विशेष रूप से विचार करना चाहिए कि जिन जीवन मूल्यों, आदर्शों एवं सिद्धान्तों की रक्षा के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने बलिदान दिया, उनकी पुनर्स्थापना के लिए स्वयं का योगदान सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

– डॉ. सुधीर शर्मा

हे ईश ! भारतवर्ष में शतबार मेरा जन्म हो । कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो ।
सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में हैं, देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है। – बिस्मिल

thearyasamaj.org

वेद की आज्ञाओं के उल्लंघन का दुष्परिणाम

महर्षि दयानन्द ने हर आर्य का परम धर्म वेद का अध्ययन –अध्यापन बताते हुए आर्य समाज का ये नियम बनाया कि "वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है" । वेदों के निरन्तर अध्ययन के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि वास्तव में ये नियम बनाकर महर्षि ने कितना गहन चिन्तन प्रस्तुत किया है। अपने इसी अध्ययन के आधार पर प्रस्तुत लेख के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि वेदों की आज्ञाओं के उल्लंघन का कितना भयानक परिणाम हो सकता है ?और इस राष्ट्र के पतन / दुर्गति का कारण भी वेद की आज्ञाओं का उल्लंघन ही है :–

1.) पहली आज्ञा :

"अक्षैर्मा दिव्यः (ऋ. 10/34/13) अर्थात् जुआं मत खेलो ।"

इस आज्ञा का उल्लंघन हुआ और वो भी किसके द्वारा – धर्मराज कहे जाने वाले युधिष्ठिर के द्वारा । **परिणाम** : एक स्त्री का भरी सभा में अपमान । महाभारत जैसा भयंकर युद्ध जिसमें लाखों योद्धा बलि चढ़ गये, हजारों विद्वान् मृत्यु को प्राप्त हुए और आर्यावर्त पतन की ओर अग्रसर हुआ ।

2.) दूसरी आज्ञा : **"मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पि :" । (ऋ. 8.48. 14) अर्थात् आलस्य, प्रमाद और बकवास हम पर शासन न करें ।**

लेकिन इस आज्ञा का भी उल्लंघन हुआ । महाभारत के कुछ समय बाद भारत के राजा आलस्य प्रमाद में डूब गये। वेद मार्ग से पतित हुए । **परिणाम** : विदेशियों के निरन्तर आक्रमण ।

3.) तीसरी आज्ञा : **सं गच्छध्वं सं वद्ध्वम् । (ऋ 10/191/2) अर्थात् मिल कर चलो और मिलकर बोलो ।**

वेद की इस आज्ञा का भी उल्लंघन हुआ । जब विदेशियों के आक्रमण हुए तो देश के राजा मिल कर नहीं चले। बल्कि कुछ ने तो आक्रमणकारियों का ही भरपूर सहयोग किया। **परिणाम** : लाखों लोगों का कत्ल, लाखों स्त्रियों के साथ दुराचार, अपार धन–धान्य की लुटपाट, गुलामी ।

4.) चौथी आज्ञा :

"कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः (अथर्व 7.50.8) । अर्थात् मेरे दाएं हाथ में कर्म है और बाएं हाथ में विजय।

वेद की इस आज्ञा का उल्लंघन हुआ । लोगों ने कर्म छोड़ कर ग्रहों, फलित ज्योतिष आदि पर आश्रय पाया । **परिणाम** : कर्म हीनता, भाग्य के भरोसे रह आक्रान्ताओं को मुंह तोड़ जवाब न देना, धन–धान्य का व्यय, मनोबल की कमी और मानसिक दरिद्रता ।

5.) पांचवी आज्ञा : **उतिष्ठत सं नहयध्वमुदाराः केतुभिः सह । सर्पा इतरजना रक्षांस्य मित्राननु धावत् ।। (अथर्व 11/10/1) अर्थात् हे वीर योद्धाओं ! आप अपने झंडे को लेकर उठ खड़े होवो और कमर कसकर तैयार हो जाओ। हे सर्प के समान क्रुद्ध रक्षाकारी विशिष्ट पुरूषों ! अपने शत्रुओं पर धावा बोल दो।**

वेद की इस आज्ञा का भी बड़ी निष्ठुरता से तब उल्लंघन हुआ जब देश में बुद्ध और जैन मत के मिथ्या अहिंसावाद का प्रचार हुआ। लोग आक्रमणकारियों को मुंह तोड़ प्रत्युत्तर देने के स्थान पर मिथ्या अहिंसावाद को मुख्य मानते हुए अकर्मण्य से बने रहे। **परिणाम** : अशोक जैसे महान् योद्धा का युद्ध न लड़ना । विदेशियों के द्वारा इसका फायदा उठा कर भारत पर आक्रमण और फिर आचार्य चाणक्य द्वारा निर्मित अखण्ड भारत पुनः खण्ड–खण्ड होने लगा ।

6.) छठी आज्ञा : **मिथो विघाना उपयन्तु मृत्युम् । (अथर्व 6.32.3) अर्थात् परस्पर लड़ने वाले मृत्यु का ग्रास बनते हैं और नष्ट भ्रष्ट हो जाते हैं।**

इस आज्ञा के उल्लंघन का परिणाम हुआ कि भारत के योद्धा आपस में ही लड़ कर मर गये और विदेशियों ने इसका लाभ उठाया।

7.) सातवीं आज्ञा : **"न तस्य प्रतिमा अस्ति" । अर्थात् ईश्वर का कोई प्रतिमान, मूर्ति, मॉडल, प्रतिमा नहीं है।**

लेकिन इस आज्ञा का उल्लंघन हुआ और परिणाम आपके समक्ष है:

- ईश्वर के सत्य स्वरूप को छोड़कर भिन्न स्वरूप की उपासना।
- करोड़ों रूपये मंदिर में व्यय करके दरिद्र होते हैं और उसमें प्रमाद होता है।
- स्त्री पुरूषों का मन्दिर में मेला होने से व्यभिचार, लड़ाई, बखेड़ा और रोगादि उत्पन्न होते हैं।
- उसी को धर्म, अर्थ, काम और मुक्ति का साधन मानके पुरूषार्थ रहित होकर मनुष्य जन्म व्यर्थ गँवाते हैं।
- नाना प्रकार की विरूद्ध स्वरूप, नाम, चरित्रयुक्त, मूर्तियों के पुजारियों का एक मत नष्ट होके विरूद्ध मत में चलकर आपस में फूट बढा कर देश का नाश करते हैं।
- उसी के भरोसे में शत्रु की पराजय और अपनी विजय मान के बैठे रहते हैं। उनकी पराजय होके राज्य स्वतन्त्रता और धन का सुख उनके शत्रुओं के अधीन हो जाता है।
- भ्रमित होके मंदिर–मंदिर, देश–देशान्तर में घूमते–घूमते दुःख पाते धर्म, संसार और परमार्थ को नष्ट करते और चोर आदि से पीड़ित होते हैं।
- दुष्ट पुजारियों को धन देते हैं । वे उस धन को वेश्या, मद्य, मांसाहार, लड़ाई–बखेड़ों में व्यय करते हैं, जिससे दाता के सुख का मूल नष्ट होकर दुःख होता है ।
- उन मूर्तियों को कोई तोड़ डालता है वा चोर ले जाता है तब हा हा करके रोते हैं ।
- पुजारी पर–स्त्रियों के संग और पुजारिन पर–पुरूषों के संग से दूषित होती है।
- यह एक झलकी है । इसके विपरीत यदि वेदों का पालन हो रहा होता तो ना केवल भारत अपितु समस्त भूमण्डल सुख और समृद्धि के शीर्ष पर बैठा हुआ होता । इसलिए महर्षि ने नारा दिया "वेदों की ओर लौटो" । इस नारे का पालन कर अधममार्ग से शीर्ष पर पहुँच गुरुकुल, लेखनी, संगठन क्षमता, तप, आदि के माध्यम से समूचे विश्व में परचम लहराने वाले अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। इसलिए जो सद्मार्ग पर हैं वो और जो अधममार्ग पर हैं वो भी निराशा को छोड़कर शेषजीवन वेदों के अनुपालन में लगावें।

– डॉ. मुमुक्षु आर्य , हृदय रोग विशेषज्ञ, नोएडा, दिल्ली

वैदिक आदर्शों से पतित होने के बाद भी पौराणिक महिलाओं ने विपरीत काल में भी अपने पतिव्रत धर्म को सुरक्षित रखा, यही कारण है कि आज भारत विश्वगुरु बनने की पुनः सोच रहा है । – अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

thearyasamaj.org

महान् व्यक्तित्व के धनी अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

''न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्'' अर्थात् मनुष्य से श्रेष्ठ कोई प्राणी नहीं है। संसार में विद्यमान असंख्य योनियों में से मनुष्य को श्रेष्ठ इसलिए माना गया है क्योंकि वह मानव से महामानव बन लाखों–करोड़ों लोगों के लिए प्रेरणा का कार्य कर सकता है, उनके लिए उपकारक बन सकता है। संसार में ऐसे अनेक महामानवों में से एक व्यक्ति के विषय में हम चर्चा करेंगे, जो कि एक समय मद्यपान, मॉसाहार आदि व्यसनों से ग्रसित होने के साथ–साथ नास्तिकता के प्रबल समर्थक भी थे और बाद में चलकर महान् समाज सुधारक, स्वतन्त्रता सेनानी, वेदभक्त, ऋषिभक्त, सदाचारी, दलितोद्धारक, शुद्धिप्रणेता के रूप में स्वनाम धन्य स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से विश्व–प्रसिद्ध हुए ।

स्वामी श्रद्धानन्द का नाम आते ही हमारे आंखों के सामने अपने दोनों पुत्रों 'इन्द्र' और 'हरिश्चन्द्र' की अंगुली पकड़कर गुरुकुल में ले जाता, बीमार ब्रह्मचारी की उल्टी को हाथ में झेलता विनम्रता की मूर्ति, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक और सर्वस्व समर्पण करता एक महान् आचार्य दिखाई देता है तो दिल्ली में रोलेट एक्ट जैसे देश विरोधी कार्य के विरोध स्वरूप एक अद्वितीय जुलूस का नेतृत्व करता और अंग्रजों की संगीनों के सामने अपना सीना खोलकर रख देने वाला क्रान्तिवीर योद्धा संन्यासी दिखाई देता है , तो कहीं वेद–प्रचार, राष्ट्रीय एकता, गुरुकुल व्यवस्था, धर्म–स्थापना आदि ऋषि–संकल्पों को मूर्तरूप देता सच्चा, अनन्य शिष्य नजर आता है।

स्वामी जी वीरता की मूर्ति , दया के अवतार , शिक्षा के आचार्य थे, शुद्धि आन्दोलन के सूत्रधार थे; संन्यासी थे, तपस्वी थे, महात्मा थे, राजा थे, वेदों के विचारक थे तथा विज्ञान के प्रचारक थे, वे अन्दर से पवित्र और बाहर से शुद्ध थे, वे अध्यात्मवादी थे और राजनीति में भी निष्णात थे। वे सच्चे महामानव थे।

एक वकील मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बनने का सफर सन् 1879 में प्रारम्भ हुआ जब स्वामी दयानन्द के साथ बरेली में अनायास ही सम्पर्क स्थापित हुआ । वे लिखते हैं ''मैंने बड़े–बड़े वक्ताओं के व्याख्यान सुने हैं, परन्तु जो ओज महर्षि की वाणी में था, वह अन्यत्र कहीं नहीं पाया। उनके भाषण से श्रोताओं को जो प्रकाश मिलता है वैसा प्रकाश किसी अन्य वक्ता की वाणी से नहीं मिलता ।''

स्वामी श्रद्धानन्द के विषय में यह कहना प्रासंगिक ही होगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा छोड़े गये कार्य को सही अर्थों में अक्षरशः पूरा करने का कार्य यदि किसी ने किया है तो वो हैं ''अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द''। यही कारण है कि स्वामी दयानन्द के बाद इन्हीं महामानव का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है। उनके जीवन की विशेष उपलब्धियां :

- अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्था गुरुकुल कांगड़ी , हरिद्वार की स्थापना एवं अद्वितीय रूप में संचालन । जिससे शिक्षा प्राप्त कर अनेक स्नातकों ने राष्ट्र–निर्माण में अमूल्य योगदान दिया । महात्मा गांधी, डा. राजेन्द्र प्रसाद के साथ–साथ अंग्रेज विद्वान, पादरी ,अधिकारी, वायसराय तक अत्यन्त प्रभावित थे।
- स्वामी जी ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने विज्ञान एवं तकनीकी के लिए पढ़ाई जाने वाली समस्त पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद कर गुरुकुल में अध्ययन आरम्भ किया ।
- लाखों हिन्दू भाई जो किसी कारणवश बिछड़ गये थे, शुद्धि आन्दोलन चलाकर उन्हें वैदिक धर्म में दीक्षित करना।
- जलियांवाला बाग हत्याकांड के पश्चात् अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन करवाना।
- अपने कार्यों, लेखनी के माध्यम से सम्पूर्ण देश में स्वाभिमान व स्वतन्त्रता की लहर चलाकर अंग्रेज सरकार की नींद उड़ा देना।
- दक्षिण अफ्रीका से आने के पश्चात् ''मि.गांधी'' को 'महात्मा' कहकर सम्बोधित करना और देश की वस्तुस्थिति से परिचित करवा कार्य करने हेतु मार्गदर्शन देना ।
- अन्त में 23 दिसम्बर, 1926 के दिन नया बाजार, दिल्ली में अब्दुल रशीद नामक धर्मान्ध युवक ने स्वामी जी को गोलियां चलाकर सदा'–सदा के लिए हमसे दूर कर दिया । आज के समय में हर युवा को, बालक को, माता–पिता को उन के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। इसलिए

''श्रद्धानन्दमहोदयान् गुरूवरान् वन्दे इति भक्त्यामुत : ।।

– श्री भवदेव शास्त्री , अजमेर

किशोरों,नौजवानों,अभिभावकों से :

कन्याओं में 12 वर्ष व बालकों में 14 वर्ष की आयु के पश्चात् एक विशेष प्रकार की उर्जा निर्मित होने लगती है। यह उर्जा सामान्य भाषा में क्रमशः रज एवं वीर्य कहलाती है। चिकित्सा विज्ञान की भाषा मे इसे ''प्रोजेस्टेस्टेरॉन हार्मोन'' व ''टेस्टोस्टेरॉन हार्मोन'' कहा जाता है । इस शक्तिदायिनी, जीवनदायिनी उर्जा को शरीर में ही पचाने तथा शक्ति के रूप में परिवर्तित होने पर शांत व नियन्त्रित रखने अर्थात् ब्रह्मचर्य पालन के लिए किशोरों, युवाओं को अग्रांकित 3 उपाय आवश्यक रूप से नियमित करने चाहिए एवं अभिभावकों को चाहिए कि वो इस सम्बन्ध में अपनी सन्तानों को उचित मार्गदर्शन एवं प्रेरणा देते रहें

1. नियमित व्यायाम और सात्विक भोजन।
2. नियमित योगाभ्यास विशेष रूप से प्राणायाम और ध्यान ।
3. सत्संगति अर्थात् अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करना, विचारवान् लोगों के साथ रहना, यज्ञ, पूजा–पाठ आदि आयोजनों में व्यस्त रहना ।

यदि ये 3 कार्य पूरी तरह करने में सफल रहकर अपनी शक्ति को शांत और नियंत्रित कर पाये तो अद्भुत योग्यता, क्षमता, असाधारणता का उदय होगा और यदि ऐसा नहीं कर पाये तो फिर यही उर्जा अनेक विकृतियाँ पैदा कर रोग, बलात्कार, व्यभिचार, हत्या, लड़ाई–झगड़ा, भ्रष्टाचार, मानसिक उन्माद, भूत–प्रेत आदि आना, उग्रता आदि को जन्म देकर समाज में अशांति और अनाचार को व्यापक बनाएगी। वर्तमान समय में कलुषित वातावरण के कारण यह शक्ति अनियंत्रित हो रही है और परिणाम आज सबके समक्ष है। :

– डॉ. अनिल रावत (आर्य), योग एवं प्राकृतिक चिकित्सक, जयपुर

आर्य समाज के कार्यों का सर्वोत्तम परिणाम गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना है। वह सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय संस्था है, जिसका शासन और प्रबन्ध स्वायत्त है। – महात्मा गांधी

thearyasamaj.org

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

आर्य समाज, मोहन नगर, हिण्डौन सिटी, (करौली) द्वारा वैदिक धर्म के प्रचारार्थ ''चतुर्वेद पारायण महायज्ञ'' दिनांक 2 –28 दिस. , 2014 रविवार तक आर्य समाज प्रांगण में आचार्य श्री शिवकुमार शास्त्री, गुरुकुल कोलायत – (बीकानेर) के ब्रह्मत्व में चल रहा है। जिसमें प्रतिदिन प्रातः 7.00 से 10.00 बजे तक एवं सायं 2.00 से 5.00 बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन का कार्यक्रम होता है । इस कार्यक्रम में प्रतिदिन सैंकड़ों की संख्या में बच्चे, युवा, महिलाएं, बुजुर्ग आदि आकर नियमित रूप से सत्संग व वेदकथामृत का पान कर रहे हैं । यज्ञ की पूर्णाहुति 28 दिसम्बर, रविवार को प्रातः 8 बजे से होगी पश्चात् ऋषि लंगर का कार्यक्रम होगा ।

वैदिक सत्संग एवं भजनोपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज, निम्बाहेड़ा एवं परोपकारी सभा द्वारा दिनांक 9–17 दिसम्बर, 2014 तक स्थानीय गांवो गादोला, मरजीवी, भगवानपुरा, बसेड़ा व जीवनपुरा में आचार्य कर्मवीर जी मेधार्थी, अजमेर के सान्निध्य में वैदिक सत्संग एवं भजनोपदेश का कार्यक्रम आयोजित किया गया । प्रत्येक गांव में दो दिन तक प्रतिदिन प्रातः यज्ञ एवं सायं 7–10 बजे तक सत्संगं एवं भजनोपदेश का कार्यक्रम पं. उपेन्द्र जी , चण्डीगढ़ के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन एवं प्रबन्धन आर्य समांज , निम्बाहेड़ा के प्रधान श्री विक्रम आंजना एवं उनके सहयोगी आचार्य सानन्द आदि द्वारा किया गया ।

– श्री राधेश्याम धाकड़

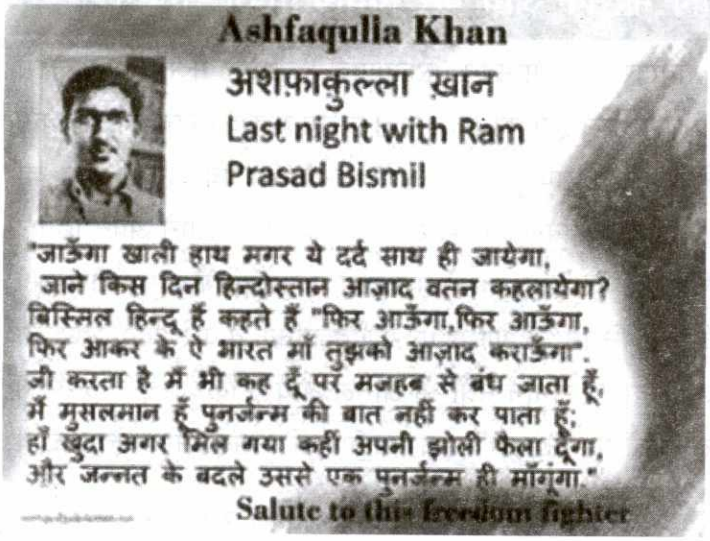

यज्ञ से जीवन में प्राप्त होगी सुख और शान्ति

उक्त विचार आर्य समाज,भगवती नगर, गंगापुर सिटी (सवाई माधोपुर) द्वारा प्रसिद्ध वेद–विद्वान डा. ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री , अमेठी एवं आचार्या डा. प्रियम्वदा जी वेदभारती, आर्ष कन्या गुरुकुल, नजीबावाद, (हरिद्वार) के ब्रह्मत्व में 25 से 31 दिसम्बर, 2014 तक पुरानी अनाज मण्डी, प्रांगण में चल रहे ''विशाल यजुर्वेद पारायण महायज्ञ'' में डॉ. प्रियम्वदा जी ने कहे । जिसमें कन्या गुरुकुल नजीबावाद की ब्रह्मचारिणियों द्वारा भजन संगीत एवं वेदपाठ की भावभीनी प्रस्तुति उपस्थित श्रोता समूह को भाव–विभोर कर रही है। 24 दिसम्बर, 2014 को 1 बजे ध्वजारोहण एवं कलश यात्रा के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ, जिसमें लगभग 500 महिलाओं ने भाग लेकर के उत्साह का परिचय दिया । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि : श्री ज्ञानदेव आहूजा, विधायक, रामगढ़, अलवर; विशिष्ट अतिथि : श्री मानसिंह गुर्जर, विधायक, गंगापुर सिटी , अध्यक्ष : श्री हरिप्रसाद बौहरा, सभापति, नगर परिषद्, गंगापुर सिटी थे । कार्यक्रम आगे दिनांक 28.12.2014 को स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, सांसद, सीकर का उद्बोधन का कार्यक्रम भी होगा। दिनांक 31.12.2014 को पूर्णाहुति के साथ कार्यक्रम का समापन किया जायेगा । यज्ञ के संरक्षक एवं प्रेरक आर्य वीर दल के संरक्षक पं. मदनमोहन जी आर्य , गंगापुर सिटी हैं

– श्री कृपाशंकर घी वाले , यज्ञ संयोजक

हार्दिक आभार

177 से अधिक देशों, जिनमें हर पंथ, सम्प्रदाय को मानने वाले देश सम्मिलित हैं द्वारा भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित ''विश्व योग दिवस'' पर मुहर लगाने तथा संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 21 जून को ''विश्व योग दिवस'' घोषित किये जाने पर सभी देशवासियों को बधाई एवं माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को बहुत – बहुत धन्यवाद । आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान उनका हृदय से आभार व्यक्त करती है। यह गौरव का विषय है कि योग की सार्वभौमिकता एवं वैज्ञानिकता को सम्पूर्ण विश्व ने एकमत से स्वीकार किया है।

– मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राज.

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के पूर्व मंत्री एवं सभा के मुखपत्र ''आर्य मार्तण्ड'' के पूर्व मुख्य सम्पादक आदरणीय श्री अमरमुनि जी आर्य , अलवर के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करते हुए हम उनका आभार व्यक्त करते हैं कि विगत 1 दशक से भी अधिक समय से अनेक प्रकार की व्यक्तिगत व सामाजिक विषम परिस्थितियॉ होते हुए भी आर्य मार्तण्ड पत्र का नियमित सम्पादन, प्रकाशन एवं वितरण कार्य अनवरत रूप से संचालित किया । इस प्रबल पुरूषार्थ के लिए सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल एवं सभी सदस्यगण सदैव आभारी रहेंगे। पुनः उनके उत्तम स्वास्थ्य की शुभकामनाओं के साथ हार्दिक आभार ।

– डॉ. सुधीर शर्मा

मरते बिस्मिल, रोशन, लहरी, अशफाक अत्याचार से , होंगे पैदा सैंकड़ों उनके रुधिर की धार से । – बिस्मिल

thearyasamaj.org

नौजवानों को दी जा रही है स्वास्थ्य एवं बौद्धिक शिक्षा

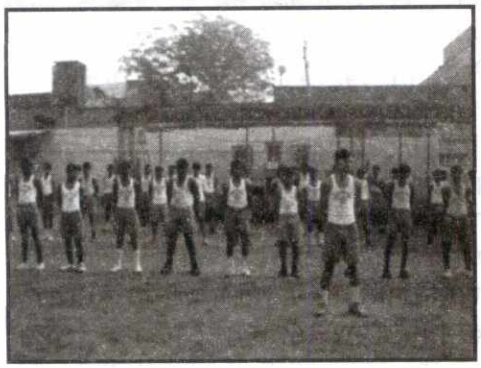

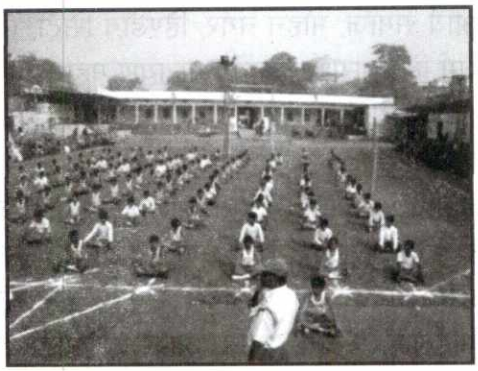

आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य वीर दल , राजस्थान प्रान्तीय इकाई द्वारा "चेतन विद्या मन्दिर उ.मा. विद्यालय, "शास्त्री सर्किल, सुमेरपुर, जिला – पाली एवं "महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय (डीएवी) , नई मण्डी , घड़साना जिला– श्री गंगानगर आदि स्थानों पर 24 दिसम्बर से चल रहे आवासीय " योग व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर " में राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों से आए हुए सैंकड़ों युवाओं व बालकों को भारतीय संस्कृति, उच्च नैतिकता, शूरवीरता, धैर्य, विनम्रता, विचारशीलता आदि गुणों के विकास हेतु प्रशिक्षण दिया जा रहा है। शीतऋतु के प्रकोप को खुली चेतावनी देते हुए ये शिविरार्थी यज्ञ, संध्या, योग, विविध व्यायाम, दण्ड–बैठक , जूड़ो–कराटे, अस्त्र–शस्त्र, लाठी आदि का नियमित प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं । शिविर में प्रतिदिन दोपहर में 2.30 से 4.00 बजे तक होने वाले "बौद्धिक सत्र" में विभिन्न विषय –विशेषज्ञों द्वारा स्वास्थ्य, आहार, धर्म, मनुष्य जीवन आदि अनेक विषयों पर सेमिनार अथवा कार्यशालाओं के माध्यम से ज्ञानवृद्धि कर मानसिक विकास किया जा रहा है।

दोनों ही शिविरों का उद्घाटन एक साथ शिविर स्थलों पर ही 24 दिसम्बर, 2014 को सायं 4 बजे ध्वजारोहण के साथ किया गया । शिविरों का संचालन प्रान्तीय संचालक श्री सत्यवीर जी आर्य, अलवर के सान्निध्य में श्री भवदेव शास्त्री , श्री देवेन्द्र शास्त्री द्वारा किया जा रहा है। "चेतन विद्या मन्दिर उ.मा. विद्यालय , शास्त्री सक्रिल, सुमेरपुर (पाली) में चल रहे शिविर का समापन समारोह 31 दिसम्बर को प्रातः 10 बजे से आयोजित किया जायेगा जिसमें यज्ञ, भजन आदि के साथ योग एवं व्यायाम प्रदर्शन व पुरस्कार वितरण किया जायेगा । महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय (डीएवी) , नई मण्डी, घड़साना (श्रीगंगानगर) में चल रहे शिविर का समापन समारोह 30 दिसम्बर को प्रातः 10 बजे शिविर स्थल पर ही किया जायेगा ।

– आचार्य देवेन्द्र शास्त्री ,
प्रान्तीय कार्यकारी संचालक, राजस्थान प्रान्त

स्वर्णमयि लंकाऽपि न मे लक्ष्मण रोचते ।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि ।

अर्थात् हे लक्ष्मण! स्वर्ण की लंका भी मुझे अच्छी नहीं लगती है। मेरे लिए माँ और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल की जयपुर इकाई की मासिक आर्य वीर विचार गोष्ठी सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीर दल की जयपुर इकाई द्वारा 7 दिस., 2014 रविवार को सभाभवन , राजापार्क , जयपुर में सायं 4 बजे से "मासिक आर्य वीर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। लगभग 2 घण्टे चले इस कार्यक्रम में सर्वप्रथम यज्ञ व भजन का कार्यक्रम हुआ । पश्चात् वेद के सिद्धान्त "त्रैतवाद" के सिद्धान्त की वैज्ञानिकता और उपयुक्तता पर विचार–विमर्श एवं वाद–विवाद का कार्यक्रम हुआ । जिसमें उपस्थित युवाओं ने अद्वैतवाद, द्वैतवाद, कुरान, बाइबिल, आगम आदि के विषयों में अपने अपने विचार रखकर सत्य एवं वैज्ञानिक सिद्ध करने का प्रयास किया । परन्तु त्रैतवाद के सिद्धान्त की वैज्ञानिकता व सत्यता के समक्ष शेष सभी सिद्धान्त असहाय नजर आये और अन्ततः त्रैतवाद भौतिक विज्ञान के सूत्रों, नियमों के आधार पर पूर्ण वैज्ञानिक व वास्तविक सिद्धान्त के रूप में स्वीकार किया गया । इस कार्यक्रम की समस्त व्यवस्था एवं संचालन संभाग मंत्री श्री अनिल आर्य ने किया। इस कार्यक्रम में अपनाये गये तरीके से इंजीनियरिंग, मेडिकल आदि के उपस्थित छात्रों पर बड़ा ही गहरा प्रभाव पड़ा । अन्त में शान्ति पाठ व जयघोष के साथ कार्यक्रम का समापन किया ।

– दीपक शास्त्री ,जिला संचालक, जयपुर

पराजित मन, व्यक्ति व राष्ट्र प्रायः विजेता की संस्कृति, संस्कार व जीवन मूल्यों को स्वीकार कर लेते हैं और यही उनके पतन का मुख्य कारण होता है। – चाणक्य

thearyasamaj.org

डी ए वी वैशाली में खेलों के महाकुम्भ का विशाल आयोजन

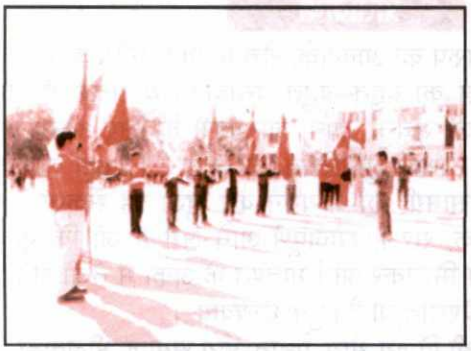

जयपुर! वैशाली नगर स्थित डी ए वी पब्लिक स्कूल में दिनांक 05 दिसम्बर से 07 दिसम्बर 2014 तक दिल्ली स्थित डी ए वी कॉलेज प्रबन्धक समिति, नई दिल्ली के दिशा–निर्देशों के अनुसार डी ए वी स्कूल वैशाली नगर के प्राचार्य श्री अशोक कुमार शर्मा के संयोजन में "अण्डर–19, **डी ए वी नेशनल स्पोर्ट्स – 2014"** का आयोजन किया गया, जिसमें पूरे भारत में स्थित लगभग 850 डी ए वी शिक्षण संस्थाओं के 13 जोन्स के 1500 से अधिक खिलाडियों ने हिस्सा लिया। खेलों के इस महाकुम्भ में क्रिकेट, फुटबॉल, टेबल टेनिस, चैस, बैडमिन्टन, स्विमिंग, वालीबॉल एवं एथलेटिक्स समेत विविध प्रकार की 19 प्रतिस्पर्धाएं आयोजित की गई ।

प्रतियोगिता का उद्घाटन दिनांक 05.12.2014 को विद्यालय के क्रिकेट मैदान में तथा प्रतियोगिताएं जयपुर स्थित सवाई मानसिंह स्टेडियम, एन बी सी, रेलवे क्रिकेट मैदान, जयपुर शूटिंग रेंज, मोती नगर, जयपुर में आयोजित की गई। इस सम्पूर्ण आयोजन का समापन दिनांक 07.12.2014 को सवाई मानसिंह स्टेडियम में आयोजित किया गया । जिसमें भव्य समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम की सुन्दर प्रस्तुति के साथ विजेताओं को पुरस्कृत किया गया एवं सभी प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र वितरित किये गये ।

ज्ञातव्य है कि डी ए वी नेशनल स्पोर्ट्स प्रथम स्तर में कलस्टर, द्वितीय स्तर पर जोनल और फिर राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किए जाते हैं।

– श्री अशोक कुमार शर्मा, प्राचार्य , डी ए वी स्कूल वैशाली नगर, जयपुर

दिल्ली की समस्त शिक्षण संस्थाओं का सामूहिक वार्षिकोत्सव–विचारोत्सव समारोह

कल, आज और कल' सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में दिनांक 21 नव.2014 को दिल्ली की समस्त आर्य शिक्षण संस्थाओं का सामूहिक वार्षिकोत्सव "कल, आज और कल" का आयोजन किया गया। एम.डी.एच. के चैयरपर्सन महाशय धर्मपाल जी के सान्निध्य में आयोजित हुए कार्यक्रम का आरम्भ राष्ट्र समृद्धि यज्ञ से किया गया । पश्चात् विद्यार्थियों द्वारा संस्कृति, धर्म, इतिहास आदि को अपनी संगीतमयी भावपूर्ण प्रस्तुतियों द्वारा मंच पर दर्शाया तथा भारत की वर्तमान समस्याओं के समाधान, महर्षि के मन्तव्य को प्रकाशित करने वाली अनेक प्रस्तुतियां दी । कार्यक्रम में श्री सुरेन्द्र कुमार जी ने आर्य विद्या परिषद् द्वारा विद्यालयों में संचालित की गई विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी । समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. हर्षवर्द्धन जी, केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार एवं श्री प्रभात झा, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय भाजपा ; अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार जी चौहान (संस्थापक, अध्यक्ष, अमिटी शिक्षण संस्थानद्ध) विशिष्ट अतिथि : डॉ. सत्यपाल सिंह जी, लोकसभा सांसद थे। सभी ने अपने–अपने विचारों के माध्यम से उपस्थित लगभग 5000 विद्यार्थियों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। अन्त में विभिन्न शिक्षाविदों को उनके विशिष्ट योगदान के लिए सम्मान किया गया । कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री श्री विनय आर्य ने किया ।

वैदिक आदर्शों से पतित होने के बाद भी पौराणिक महिलाओं ने विपरीत काल में भी अपने पतिव्रत धर्म को सुरक्षित रखा, यही कारण है कि आज भारत विश्वगुरू बनने की पुनः सोच रहा है । – अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

thearyasamaj.org

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-221 / 2014-2016 / आर. एन. आई नं.10471/60

आवश्यक सूचना

- आर्य मार्तण्ड के समस्त सदस्यों, पाठकों से निवेदन है कि अपने सुझाव, प्रतिक्रियाएं, कार्यक्रम आदि की विज्ञप्तियां, लेख, सूचनाएँ हमें aryamartand@gmail.com व dr.sudhirsharma@yahoo.com पर ई–मेल करें अथवा अग्रलिखित पते पर भेजें – **डॉ. सुधीर शर्मा, 42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर –302018** ।
- सभी से निवेदन है कि आर्य मार्तण्ड को प्रकाशनार्थ भेजी जाने वाली रचनाएँ, लेख पूर्णतया मौलिक एवं अन्यत्र अप्रकाशित होवें।
- आर्य मार्तण्ड को भेजी गई किसी भी रचना को प्रकाशित होने में अधिकतम 2–3माह तक का समय लग सकता है ।
- आर्य मार्तण्ड को प्रकाशनार्थ भेजी गयी किसी भी सामग्री में लिफाफे के ऊपर अथवा पत्र के ऊपर ''प्रकाशनार्थ'' अवश्य लिखें।

– सम्पादक

प्रतिक्रिया

''आर्य मार्तण्ड'' के स्वरुप को आकर्षक, रोचक एवं पठनीय बनाने के लिए सम्पादक मण्डल का बहुत–बहुत धन्यवाद। ये अच्छा है कि इसमें प्रत्येक प्रकार की सूचना, ज्ञान, जानकारी के लिए अलग से शीर्षक बनाकर उनका स्थान सुनिश्चित कर दिया है। इससे व्यक्ति अपनी रुचि अनुसार सामग्री का अध्ययन कर जुड़ा रह सकता है। लेख भी अधिक रोचक, सरल, खोजपूर्ण आने लगे हैं जो कि एक अच्छा प्रयास है। कुल मिलाकर आर्य मार्तण्ड के अंकों में तेजी से हो रहे सुधार सुखद एवं प्रेरणादायी हैं। पुनः धन्यवाद ।

–श्री विजय आर्य ,प्रधान आर्य समाज, भीलवाड़ा

पत्र–पत्रिकाएँ समाज, संगठन या राष्ट्र को परस्पर जोड़ने, सामाजिक चेतना पैदा करने, ज्ञानवर्द्धन करने का कार्य करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि सम्बन्धित पत्र अपने पाठकों से स्वस्थ एवं नियमित संवाद स्थापित करने में सफल हों। अतः उनका आकर्षक एवं सबके लिए सुगम होना आवश्यक है। यह हर्ष का विषय है कि विगत 2–3 अंकों से ''आर्य मार्तण्ड'' का यह परिवर्तित आकर्षक रूप एवं सम्पादक मण्डल के सदस्यों द्वारा पत्र के सदस्यों, आर्य संस्थानों, विद्वानों, आर्य समाजों, पदाधिकारियों से निरन्तर सम्पक्र स्थापित करना इस बात का संकेत है कि यह पत्र शीघ्र ही पुनः अपनी पुरानी गरिमा, उर्जा और तेज के साथ अपना स्थान बनाने में सफल होगा, साथ ही आर्य समाज के संगठन को पुनर्गठित करने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। नवगठित सम्पादक मण्डल को मेरी शुभकामनाएँ।

–डॉ. रामपाल विद्याभास्कर, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान, डीएवी, जयपुर

आगामी कार्यक्रम

- 28 दिस., 2014 को प्रातः 8 बजे से आर्य समाज, मोहन नगर, हिण्डौन सिटी में 2 दिस., 2014 से चल रहे ''चतुर्वेद पारायण महायज्ञ'' की पूर्णाहुति व ऋषि लंगर ।
- 31 दिसम्बर, 2014 को प्रातः 8 बजे से आर्य समाज, भगवती नगर, गंगापुर सिटी द्वारा पुरानी अनाज मण्डी, गंगापुर सिटी में चल रहे ''यजुर्वेद पारायण महायज्ञ'' की पूर्णाहुति।
- 30 दिस.,2014 को प्रातः 10 बजे से सार्वदेशिक आर्य वीर दल की ओर से चल रहे बीकानेर संभागीय ''योग, व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर ''का महर्षि दयानन्द उ.मा. विद्यालय (डीएवी), नई मण्डी, घड़साना में समापन समारोह।
- 31 दिसम्बर, 2014 को प्रातः 10 बजे से सार्वदेशिक आर्य वीर दल, राजस्थान के आवासीय शीतकालीन ''योग, व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर '' का आर्य समाज, सुमेरपुर पाली में भव्य समापन एवं व्यायाम प्रदर्शन।
- आर्य वीर दल , शीशवाड़ा की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में विशाल ''युवा सम्मेलन'' का 28 दिसम्बर, 2014 रविवार को राजकीय माध्यमिक विद्यालय, शीशवाड़ा, महवा में प्रातः 10 बजे से आयोजन । मुख्य अतिथि : स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, सांसद, सीकर होंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पाक्र जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित। मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर शर्मा, मंत्री–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषित

प्रेषकः–
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पाक्र, जयपुर–302004

यूको बैंक A/c No.:18830100010430 तिलक नगर, जयपुर

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।